प्रस्तावना :-

'जे॰ पी॰ आंदोलन' स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक ऐसी घटना है जिसमे लगभग सभी चीजों के मुहाने टूटे । विशेष रूप से हिंदी पत्रकारिता का और देश के बौद्धिक नेत्रित्व का कपटी चेहरा सामने आया । आपातकाल ने हिंदी पत्रकारिता को सरासर बेनकाब कर दिया । जबकि हिंदी पत्रकारिता का जन्म ही आन्दोलन से हुआ है । गुलाम भारत में जन्मीं जिस पत्रकारिता का लक्ष्य ही देश को स्वतंत्र करना हो, वह पत्रकारिता स्वतंत्र भारत में कैसे अपने लक्ष्यों से भटक सकती है ? इसका प्रमाण हमें आपातकाल के दौरान देखने को मिलता है । हालांकि जयप्रकाश नारायण ने इस छात्र आन्दोलन का नेत्रित्व १८ मार्च, १९७४ की घटना के बाद प्रारंभ किया । हालांकि इस छात्र आन्दोलन के बीज जे॰ पी॰ के मन में १९७१ में ही पड़ चुके थे जिसकी परिणिति १९७४ में एक विशाल आन्दोलन के रूप में सामने आई, जिसे 'सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन' के नाम से जाना गया ।

अब तक भारत में जितने भी आन्दोलन हुए हैं उसमे पत्रकारिता का विशेष योगदान रहा है । जनसंचार का सबसे सरल और सुलभ माध्यम पत्रकारिता ही थी । जिसके माध्यम से तमाम बुद्धजीवियों ने अपने लक्ष्य को अंजाम दिया । समाचार पत्र किसी भी राष्ट्र का आइना होता है और आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है । पराधीन भारत में आन्दोलन की बात तो बनती है पर ऐसे क्या कारण रहें होंगे कि स्वतंत्र भारत में भी असंतोष की वजह से आन्दोलन करना पड़ा । हालांकि आन्दोलन को व्यापक बनाने में हिंदी

पत्रकरिता ने पूरा साथ दिया, पर अंतिम चरण में अपनी नीतियाँ बदल कर अपने ऊपर कलंक लगाने का जो कार्य हिंदी पत्रकारिता ने किया उसकी वजह से सफल रहते हुए भी यह आन्दोलन असफल रहा ।

यह आंदोलन इतना वृहद रूप ले लेगा यह किसी को आभास न था । ऐसे में आम जन की भागीदारी होती है और यह सफल हो जाता है । क्योंकि लोगों में आक्रोश पहले से व्याप्त था बस मौके की तलाश थी जैसे ही लोगों को मौका मिला जगह-जगह रेल पटरियां, डाक, तार सरकारी इमारतें नष्ट करने लगे । इस आंदोलन में लोग खुद अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे थे । जहां-जहां प्रशासन आंदोलनकारियों के विरोध को दबाती दूसरे जगह और भी तेजी से लोग उठ खड़े होते ।

यह आश्चर्य का विषय है कि 'जे॰ पी॰ आन्दोलन' को हुए ३८ वर्षों से ऊपर हो रहा है और हिंदी समाचार पत्र व आपातकाल के बारे में अलग-अलग काफी कुछ लिखा पढ़ा गया है । किंतु 'हिंदी पत्रकारिता और जे॰ पी॰ आन्दोलन' के बारे में जिसमें दोनों का समावेश हो कम मिलता है । कम से आशय तथ्यपूर्ण सप्रमाणित विवेचनात्मकता से है ।

इस शोध-प्रबंध को तीन अध्यायों में बांटा गया है । जिसमे प्रथम अध्याय 'हिंदी पत्रकारिता और आन्दोलन' है जिसके अंतर्गत अब तक हुए आन्दोलनों में हिंदी पत्रकारिता का स्वरुप, स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका, पत्रकारिता व आन्दोलन की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर विश्लेषित किया गया है ।

द्‌वितीय अध्याय में 'जे॰ पी॰ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है ।

तृतीय अध्याय 'हिंदी पत्रकारिता में जे॰ पी॰ आंदोलन का अभिग्रहण' के अंतर्गत यह पता लगाने की कोशिश की गयी है कि हिंदी पत्रकारिता ने इस आन्दोलन को कितना महत्त्व दिया । आंदोलन को बृहद रूप प्रदान करने में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका को स्पष्ट किया गया है ।

इन तीनों अध्यायों के अध्ययन के बाद उपसंहार प्रस्तुत किया गया है । इस लघु-शोध में 'आज' हिंदी दैनिक व 'दिनमान' साप्ताहिक के जनवरी १९७४ से दिसंबर १९७५ तक के अंकों तथा जे॰ पी॰ आन्दोलन एवं पत्रकारिता से सम्बंधित विभिन्न पाठ्य-पुस्तकों के आधार पर जानकारी एकत्रित की गयी है । ऐसी उम्मीद है की इस लघु शोध-प्रबंध में उपलब्ध तथ्य हिंदी पत्रकारिता व जे॰ पी॰ आन्दोलन के अंतर्संबंधों को समझाने में सहायक सिद्ध होंगे ।

➢ शोध प्रविधि:-

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में अंतर्वस्तु विश्लेषण शोध-प्रविधि का प्रयोग किया गया है ।

➢ उद्देश्य:-

- जे॰ पी॰ आन्दोलन की पृष्ठभूमि का अध्ययन ।
- जे॰ पी॰ की वैचारिकी का अध्ययन ।
- हिंदी पत्रकारिता और जे पी आन्दोलन के अंतर्संबंधों का अध्ययन ।
- जे॰ पी॰ आन्दोलन और आपातकाल की पत्रकारिता का अध्ययन ।

➢ शोध समयावधि:-

जनवरी, १९७४ से दिसंबर, १९७५ तक के 'आज' हिंदी दैनिक समाचार पत्र व 'दिनमान' साप्ताहिक पत्रिका तक ही सीमांकित है ।

➢ साहित्य पुनरावलोकन:-

इस संबंध में जे. नटराजन कृत भारतीय पत्रकारिता का इतिहास, मूलरूप से अंग्रेजी 2002 में प्रकाशित हुई जिसमें भारतीय पत्रकारिता का इतिहास का वर्णन किया गया है । इसके अतिरिक्त 'हिंदी पत्रकारिता: विविध आयाम' भाग-1-2 वेद प्रताप वैदिक कृत पत्रकारिता के बारे में वर्णन किया है । रामशरण जोशी द्वारा लिखित 'मिडिया मिशन से बाजारीकरण तक' व अर्जुन तिवारी कृत 'हिंदी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास' में तत्कालीन पत्रकारिता के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध हेतु पूर्वांचल व बिहार के उन महत्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण किया गया जो शोध-कार्य से सम्बंधित थे । साथ-साथ विभिन्न संग्राहलयों, पुस्तकालयों के अध्ययन के उपरांत यह शोध कार्य पूर्ण हुआ है । इस लघु शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोत का उपयोग किया गया है ।